भारत की राजनीति में भारतीय नारीवादी दर्शन की उपादेयता का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. अमित कुमार कुशवाहा
सहायक आचार्य
राजनीति शास्त्र विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ उत्तर प्रदेश

शोध सार

भारतीय नारीवादी विमर्श की व्यापकता भारतीय संस्कृति की भाँति ही प्रचीन एवं मूल्य परक हैं। भारतीय सनातन संस्कृति में नारी को आदिशक्ति स्वरुप में स्वीकार किया गया है। आमुख शोधपत्र भारत की राजनीति में भारतीय नारीवादी चिन्तन एवं दर्शन का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। पश्चिमी नारीवादी विमर्श में नारी की स्थिति को सामाजिक विषय के रूप में प्रस्तुत करते हुए नारी के अधिकारों एवं समानता पर बल दिया गया है, वहीं भारतीय सनातन संस्कृति नारी को संसार की उत्पत्ति का कारण मानती हैं। भारतीय ऋचाओं एवं शास्त्रो में नारी एवं सुद्धघ उपस्थिति एवं सहभागिता को दर्शाया गया। इस प्रकार कालान्तर में भारतीय नारीवाद विमर्श यूरों सेंट्रिक विचार ने प्रभावित हुआ हैं। प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय सनातन नारीवादी दर्शन की व्यापकता एवं सैद्धांतिक पक्ष को प्रदर्शित करता हैं, और नारी के समाज में अभूतपूर्व स्थान को रेखाकित करता है।

मुख्य शब्द: *आदिशक्ति, नारीवादी विमर्श, दर्शन, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, समाज और धर्म, सर्व–शक्तिहीन, विवाह संस्कार और पश्चिमी नारीवाद*

1. भूमिका

आमतौर पर यह माना जाता हैं की नारीवाद की अवधारणा हम तक पश्चिम से पहुँची और हम आमतौर पर हेलन ऑफ़ अंजू , लॉरा सेरेटा, शोफिया एलिस्बत ब्रेनर, ब्लिंपे डी गोज़ेस , एनी नाइट, मैरी वेलेस्टोनेक्राफ़्ट , सुसान एंथोनी, एनी बेसेंट और लॉरा बोर्डन जैसे नारीवादियों के बारे में सुनते हैं। सिमोन दी बेवेयर, सुसान , ब्राउन मिलर जैसे पश्चिमी नारीवादियों की एक लंबी श्रृंखला हैं। लेकिन भारत की वैदिक सनातन परंपरा की बृहद दृष्टि से अवलोकन किया जाए तो भारतीय समृद्ध नारीवादी विमर्श एक अद्भुत समन्वयवादी विचार प्रस्तुत करता हैं। पवित्र वेद, पुराण, रामायण और महाभारत जैसे प्राचीन भारतीय साहित्य का अध्ययन करते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि नारीवाद की अवधारणा इनमें अंतर्निहित है, और इसकी प्रकृति पश्चिम से पूरी तरह से भिन्न है इसलिए, प्राचीन भारतीय साहित्य में भारतीय नारीवाद की प्रकृति की व्याख्या एवं अन्वेषणात्मक अध्ययन करना समीचीन प्रतीक होता है। समकालीन नारीवाद की अवधारणा भारत के सामाजिक अध्ययन के क्षेत्र में पश्चिम देशों से प्रभावित हुई, जैसे कुछ नारीवादी विचारक में हेलन ऑफ अंजु, लॉरा सोटा, सोफिया एलिसबेट ब्रेनर, ब्लीम्पे डी गॉजेस, ऐनी नाइट, मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट, सुसान एंथोनी, एनी बसंत, लौरा बोर्डेन जैसें आदि नारीवादियों के बारे में विचारक हैं।

भारत की वैदिक सनातन सांस्कृतिक परंपराओं में विदुषी महिलाओं की अनवरत परंपरा है जिनमें घोषा, लोपामुद्रा, गार्गी और मैत्रेयी आदि ने भारतीय नारीवाद विमर्श के साथ बौद्धिक और आध्यात्मिक उपलब्धियों की प्रतीक है । प्राचीन भारतीय साहित्य में शशक्त महिलाओं ने अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई और तर्क दिए, लेकिन उन्होंने समान रूप से स्वीकार किया कि पुरुष और महिला एक दूसरे के पूरक हैं, जिन्होंने अपने जीवन की यात्रा में बहुत सारे कष्टों और कठिनाइयों के बावजूद अपने कर्तव्यों का पालन किया है। यह नारीवाद की विशिष्ट प्रकृति है जो अति प्राचीन काल से अधिकांश भारतीय महिलाओं के मन में निरंतर बहती रही है।

2. प्राचीन भारत में नारीवादी दर्शन

सामान्यतः नारीवाद को पश्चिमी विचार माना जाता है और यह माना जाता है कि भारत में किसी भी नारीवादी दर्शन का अस्तित्व प्राचीन काल से ही विद्यमान नहीं रहा है, और जो नारीवादी विचार समकालीन सामाजिक अध्ययन में हम देखते हैं वह पश्चिम से प्रभावित नारीवाद है। प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन व साक्ष्यों से ज्ञात होता है, कि भारतीय नारीवादी दर्शन यूरो सेंट्रिक औपनिवेशिक विचार के अधिपत्य का शिकार हुआ और वह स्थापित भारतीय विकसित समतामूलक और समन्वयवादी नारीवादी विमर्श पत्तन की ओर उन्मुख हो गया। सांख्यकारिका दर्शन पुरातन और प्रचलित आदिविचार को प्रस्तुत करने वाले द्वैतवाद को रखता है जिसमे प्रकृति और पुरुष के एकाकी भाव से प्रकृति के निर्माण की प्रक्रिया का वर्णन मिलता हैं। सांख्यकारिका सृष्ठि के निर्माण स्वरूप समाज में स्त्री और पुरुषों की भूमिकाओं को प्रतिबिंबित करते हुए इन्हें पूरक बताया गया है।

भारत के वैदिक काल और उत्तर वैदिक काल में एक समृद्ध नारीवादी दर्शन देखने को मिलता है, साथ ही यदि हम हड़प्पा सभ्यता के साक्ष्य देखें तो वह भी यह साबित करते हैं कि हड़प्पा सभ्यता में भी महिलाओं को पूजनीय माना जाता था।[1] महिलाओं को हड़प्पा सभ्यता में उर्वरता की देवी प्रकृति में संतुलन का पर्याय समझा गया। ऋग्वेद में पत्नी के लिए "जायदेस्तम"[2] शब्द का प्रयोग किया गया है जिसका अर्थ है कि पत्नी ही घर है। उपनिषद व ऋग्वेद में घोषाला, अपाला और विश्ववारा जैसी विदुषी महिलाएं भी हुई हैं जिन्होंने साहित्य, मंत्र और वेद लेखन में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। महाकाव्य और पुराणों में महिलाओं को संपत्ति के निर्धारण में बराबर का बताया गया हैं। प्राचीन प्रमाण मिलते हैं की राजा मोरध्वज के शासन में महिला अंगरक्षक की भूमिका में थी और सातवाहन और गौतमी पुत्र शतकर्णी जैसे दक्षिणी वंशीय राजाओं ने मातृ सत्तात्मक समाज का भी उदाहरण पेश किया[3]।

3. प्राचीन भारत में महिला शिक्षा की स्थिति दो प्रकार से समझी जा सकती है

- ब्रम्हवेदनीय अर्थात वे महिलाएं जो कभी विवाह नहीं करती थी तथा वेदों के अनुसार जीवन यापन करती थी।
- सद्योद्वाहस यह महिलाएं तब तक वेद पड़ती थी जब तक शादी नहीं होती थी, फिर उसके बाद वेदों को पड़ना बंद कर देती थी।

4. प्राचीन भारत में राजनीति में महिलाओं की स्थिति

मेगास्थनीज ने महिलाओं के लिए पंड्या शब्द का प्रयोग किया है जो यह बताता है कि यह महिलाएं प्रशासन चलाती थी।[4] कश्मीर, ओडिशा, आंध्र प्रदेश पर महिला परेश आशिका का शासन रहा। कन्नड़ चित्र में महिला प्रशासक के उदाहरण भी देखने को मिलते हैं, हालांकि हम देखते हैं कि शिक्षा तक विशेष वर्ग की महिलाएं ही संबंधित रही है, इस प्रकार सामान्य वर्ग की महिलायें पिछड़ापन और समस्याओं का सामना कर रही थी। ऋग्वेद संहिता में हमें ऋषिकाओं द्वारा रचित

कई ऋचायें प्राप्त होती है।सनातन हिंदू परिणयसूत्र में जिन मंत्रों का उच्चारण किया जाता है उनकी रचना सूर्या सावित्री ने की थी। उपनिषदों में मैथिली, गार्गी जैसे दार्शनिक और विदुषी महिलायें सार्वजनिक बौद्धिक चर्चा में संलग्न मिलती हैं। पांडू और कुंती संवाद से यौन स्वतंत्रता के उदाहरण भी हमें देखने को मिलते हैं पांडु के श्रापित होने के कारण पांडू कुंती को किसी अन्य से पुत्र प्राप्ति का सुझाव देते हैं कुंती के द्वारा विरोध करने पर पांडू उस समय को याद करते हैं जहां महिलाओं और पुरुषों को सामान्य स्वतंत्रता थी और विवाह के बाहर यौन संबंधों को धर्म के बाहर नहीं माना जाता था।[5] अर्थात यदि देखें तो प्राचीन भारतीय समाज में उन संप्रत्यय और उन विषयों का समावेश देखने को मिलता है जिन संप्रत्यय और विषयों के साथ पश्चिमी नारीवादी विचार की शुरुआत हुई थी।

- शिक्षा का अधिकार
- राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अधिकार
- राजनीतिक शासन प्रशासन का अधिकार
- सामाजिक सम्मान
- साहित्यिक पहचान
- यौन स्वतंत्रता

प्राचीन भारतवर्ष में महिलाओं का बहुत महत्वपूर्ण स्थान था, वास्तव में उस समय के पुरुषों से कहीं बेहतर स्थान था। साहित्यिक प्रमाण बताते हैं कि राजाओं और कस्बों को नष्ट कर दिया गया क्योंकि शासकों ने एक अकेली महिला को प्रताड़ित किया। उदाहरण के लिए, वाल्मीकि रामायण के संदर्भ से सिद्ध होता है कि रावण और उसके पूरे राज्य का सफाया हो गया क्योंकि उसने माता सीता का अपहरण कर लिया था। वेद व्यास ने महाभारत में उद्धरण किया है कि सभी कौरवों का कुरूक्षेत्र में अंत हुआ क्योंकि उन्होंने द्रौपदी को सभा में सार्वजनिक रूप से अपमानित किया था। जैन साहित्य में वर्णित इलांगो अडिगल के सिल्लापथिगारम उल्लेखित है कि पांड्यों की राजधानी मदुरै को जला दिया गया था, क्योंकि पांड्यों ने महिला अपमान किया था। वोडिक समय में महिला और पुरुष कई पहलुओं में समान थे। पुरुषों के साथ–साथ महिलाओं ने सार्वजनिक बलिदानों में भाग लिया। एक लिपि में एक स्त्री ऋषि विश्वर का उल्लेख है। कुछ वैदिक मंत्रों का श्रेय महिलाओं को दिया जाता है, जैसे अत्रि की पुत्री अपाला, इंद्र की पत्नी काकसीवंत या इंद्राणी की पुत्री घोषा।प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं को भी जनेऊ प्राप्त होता था और वे वेदों का अध्ययन कर सकती थीं,[6] हरितस्मुति में ब्रह्मवादिनी नामक महिलाओं के एक वर्ग का उल्लेख है जो अविवाहित रहीं और उन्होंने अपना जीवन अध्ययन और अनुष्ठान में बिताया। आचार्य (एक उपदेशक) और आचार्यनी (एक महिला शिक्षक या एक गुरु की पत्नी), और उपाध्याय (एक उपदेशक) और उपाध्यायनी के बीच पाणिनि का अंतर। (एक महिला शिक्षक या एक उपदेशक की पत्नी) इंगित करती है कि उस समय महिलाएँ न केवल विद्यार्थी हो सकती थीं, बल्कि पवित्र वेदों की शिक्षिका भी हो सकती थी।[7] अतीत की कई उल्लेखनीय महिला विद्वान थीं जैसे काठी, कालपी और बाहविसी। उपनिषदों में कई महिला दार्शनिकों का उल्लेख है, जिन्होंने याज्ञवल्क्य को चुनौती देने वाले वाचकनवी जैसे अपने पुरुष सहयोगियों के साथ वाद–विवाद किया। ऋग्वेद में युद्ध में संलग्न महिलाओं का भी उल्लेख है। एक रानी बिस्पला का उल्लेख किया गया है, और मेगस्थनीज (सा. हिंदू महिलाओं की हानि के लिए, पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानता को प्रोत्साहित करने के रूप में हिंदू धर्म की कभी–कभी आलोचना की जाती है। यह धारणा गलत है वैदिक काल में, हम घोषा, लोपामुद्रा, रोमशा और इंद्राणी जैसी महिला विद्वानों के सामने आते हैं। उपनिषद काल में सुलभा, मैत्रेयी, गार्गी जैसी महिला दार्शनिकों के नाम हैं। धार्मिक मामलों में, हिंदुओं ने महिलाओं को देवत्व के स्तर तक ऊंचा किया है। भारत और हिंदू धर्म के बारे में सबसे गलत धारणाओं में से एक

यह है कि यह एक पुरुष प्रधान समाज और धर्म है और सच्चाई यह है कि ऐसा नहीं है। यह एक ऐसा धर्म है जिसने खीलिंग को शक्ति और शक्ति के लिए शब्दों का श्रेय दिया है। "शक्ति" का अर्थ है "शक्ति" और अनंत शक्ति"। सारी पुरुष शक्ति स्त्री से आती है। त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) अपनी महिला समकक्षों के बिना सर्व–शक्तिहीन है।[8]

यहां यह उल्लेखनीय है कि दुनिया भर में महिलाओं की वर्तमान जरूरतों और आकांक्षाओं के संदर्भ में नारीवाद का वैदिक दृष्टिकोण काफी आश्वस्त करने वाला है क्योंकि वे अधिक से अधिक सशक्तिकरण और स्थिति और अवसरों की समानता की मांगों में परिलक्षित हो रहे हैं। वैदिक श्लोकों के माध्यम से हमें महिलाओं की जो झलक मिलती है, वह यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि उनके पास अतीत में एक महान आदर्श था और यह प्रोत्साहित करने के लिए कि वे भविष्य में खुद को और भी अधिक योग्य साबित करेंगी। भारतीय नारीवाद मूल रूप से पश्चिमी नारीवाद से इस अर्थ में भिन्न है कि यह अपने यूरोपीय समकक्षों की तरह कभी भी आक्रामक या उग्रवादी नहीं रहा, शायद इसलिए कि इसे अधिक विरोध का सामना नहीं करना पड़ा। साथ ही यह भी स्वीकार किया जाना चाहिए कि आधुनिक समय में भारतीय महिलाओं की भूमिका विरोधाभासों से भरी रही है। एक ओर, हम प्राचीन भारत पर जर्नल ऑफ स्टडीज की गौरवशाली और ईर्ष्यापूर्ण स्थिति के बारे में सुनते हैं।[9] वैदिक नारीवाद एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण की विशेषता है जो वैदिक दर्शन के मूल में है। यहां महिलाओं को भौतिक और सांसारिक चीजों के बजाय शाश्वत और अमर ज्ञान की लालसा के रूप में चित्रित किया गया है। इस बात की अच्छी तरह से पुष्टि की जा सकती है कि उन दिनों महिलाओं की शिक्षा तक स्वतंत्र और निष्पक्ष पहुंच थी और उनमें ऋषि याज्ञवल्क्य जैसे बौद्धिक दिग्गजों को चुनौती देने का साहस और दृढ़ विश्वास भी था। बृहदारण्यक उपनिषद में गार्गी और मैत्रेयी के नाम बहुत प्रसिद्ध हैं। गार्गी द्वारा याज्ञवल्क्य की खोज की गई जिरह से पता चलता है कि वह एक उच्च कोटि की दार्शनिक और दार्शनिक थीं। इस स्तर पर लिंगों के बीच असमानता के कोई संकेत नहीं हैं, यहाँ कोई लिंग पूर्वाग्रह दिखाई नहीं देता है। महिलाओं ने विद्वान सभाओं के साथ–साथ युद्धों में भी भाग लिया। बृहद–देवता में उल्लिखित वैदिक मंत्रों की बीस से अधिक महिला संत हैं। ऋग्वेद में ऐसे कई प्रसंग हैं जो यह साबित करने के लिए पर्याप्त हैं कि प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार प्राप्त थे। उन्हें किसी भी अधिकार से वंचित नहीं किया गया। उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में उचित सम्मान के साथ माना जाता था और वे एक असंगत समाज के किसी भी क्रूर कानून के अधीन नहीं थे।

वैदिक समाज में विवाह को एक धार्मिक कर्तव्य माना जाता था। इसलिए यह एक नियम के रूप में निर्धारित किया गया था कि पति अपनी पत्नी के बगल में बैठे बिना कोई भी धार्मिक बलिदान नहीं कर सकता है। वास्तव में, वह तब तक अधूरा है जब तक वह अपनी पत्नी के साथ एकमेव नहीं होता है। भारतीय प्राचीन नारीवादी दर्शन का मूल अर्धनरीश्वर के सिद्धांत पर विकसित हुई है, इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा में भेदभाव का कोई स्थान अस्तित्व में नहीं है । पुरुष और महिला के बीच वैदिक ब्रह्मांड विज्ञान के अनुसार, सर्वोच्च होने के नाते उनकी रचना के लिए खुद को दो समान हिस्सों में विभाजित किया।[10] इसलिए नर और मादा एक ही पदार्थ के दो भाग हैं, एक ही वास्तविकता के दो पहलू हैं और असमानता या पक्षपात का कोई आधार नहीं होना चाहिए। यह आध्यात्मिक पूर्वधारणा उच्च सामाजिक स्थिति की ओर ले जाती है जो वैदिक समाज में एक महिला को सौंपी जाती है। वह खुद बड़े गर्व से घोषणा करती है कि "मैं समाज का ध्वज हूं, इसका सबसे ऊंचा माथा।[11] "नारी को संसार की रचयिता भी कहा गया है, वह कुलीन, पवित्र और योग्य है। उसे अपना पति चुनने की पूरी आज़ादी थी, और इसका मतलब यह है कि उसकी शादी परिपक्व उम्र में हुई थी, और बाल विवाह का प्रचलन नहीं था। वह घर और चूल्हे तक ही सीमित नहीं थी, न ही

वह परदे में एकाकी थी, बल्कि इसमें बराबर की भागीदार थी। परिवार के साथ–साथ सार्वजनिक जीवन इस बात का कोई सबूत नहीं है, कि एक लड़की को अवांछित बच्चा माना जाता था, बल्कि भारतीय समाज में बेटी के जन्म के लिए प्रार्थना का चलन विद्यमान है । प्राचीन वैदिक समाज में घर में बेटी पैदा होने पर गर्व की भावना का वर्णन मिलता है, प्राचीन ग्रंथों में साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि महिला को वैदिक अध्ययन में दीक्षा दी जा सकती थी और बेटी का विवाह या पुनर्विवाह की भी कोई कठिन समस्या नहीं थी। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बेटी का जन्म परिवार के लिए सम्मान का विषय था। वैदिक और उपनिषद काल में वर्णित हैं की वैदिक विवाह संस्कार में बहुत अच्छी तरह से वर्णन मिलता है जहाँ पति और पत्नी के बीच मित्रता की याचना की जाती है। इससे यह सिद्ध होता है कि घर के साथ–साथ समाज में भी उसे समान एवं समतामूलक स्थान प्राप्त था। इससे यह प्रतीत होता है कि नारी परिवार और समाज में सहचरी थी, ना की अनुचारी। दोनों के बीच एक पूर्ण समानता कि भाव विद्यमान रहा है,जो नारी और पुरुष को एक पूर्णांक मानता है। वैदिक दर्शन में विवाह कोई समझौता या भौतिक सुखों या भौतिक सुख–सुविधाओं के लिए किया गया अनुबंध नहीं है, बल्कि एक संस्कार है जो जीवन के उच्चतम लक्ष्य की पूर्ति एवं एक उत्तम साहचर्य के लिए आवश्यक है। इसलिए इसे वैदिक आश्रम परंपरा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। पति और पत्नी दोनों के समाज में कल्याण के लिए समान अधिकार और कर्तव्य निदेशित किए गयें हैं, इसमें कोई अंतर नहीं है, वे एक ही इकाई के रूप में कार्य करते हैं, इसलिए नाम दंपती (दोनों घर के मालिक हैं) के रूप में स्वीकार्यता प्रदान की गई है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि दुनिया भर में महिलाओं की वर्तमान जरूरतों और आकांक्षाओं के संदर्भ में नारीवाद विमर्श स्थापित किया गया हैं, परंतु वैदिक दृष्टिकोण के अनुसार भारतीय नारीवाद दर्शन काफी आश्वस्त करने वाला है क्योंकि वे अधिक से अधिक सशक्तिकरण और स्थिति और अवसरों की समानता की मांगों में परिलक्षित हुआ है। वैदिक श्लोकों के माध्यम से हमें महिलाओं की जो स्तिथि प्राप्त होती है, वह यह दिखाने के लिए पर्याप्त है कि उनके पास अतीत में एक महान आदर्श था और यह प्रोत्साहित करने के लिए कि वे भविष्य में खुद को और भी अधिक योग्य साबित करेंगी। प्राचीन भारत में महिलाओं का आर्थिक योगदान महत्वपूर्ण था। जैसा कि भारत एक कृषि प्रधान देश था, विभिन्न मौसमी गतिविधियों में पुरुषों की सहायता के लिए महिलाओं की आवश्यकता थी। आज की तरह प्राचीन काल में भी भारत हजारों गांवों से मिलकर बना था। यह व्यक्ति नहीं बल्कि परिवार था जो मूल इकाई था। आमतौर पर परिवार की तीन पीढ़ियां अनिवार्य रूप से पितृसत्तात्मक संरचना में दक्षिण–पश्चिम में मालाबार तट को छोड़कर एक साथ रहती थी, जहां मातृसत्तात्मक सामाजिक संगठन प्रबल था। दक्षिण में तमिल महिलाओं द्वारा लिखी गई कविताएँ काम के दौरान और अपने परिवार के साथ गायन की बात करती हैं, और कभी–कभी अभिजात वर्ग के कारनामों पर कविताएँ भी शामिल करती हैं।[12]

भारत के दो प्रसिद्ध महाकाव्य महाभारत और रामायण में महिलाओं को धार्मिक और कानूनी साहित्य की तुलना में अधिक स्वतंत्रता और योग्यता के रूप में दिखाया गया है। महाभारत में बहुपतित्व और बहुविवाह दोनों के प्रमाण मिलते हैं, इन कहानियों की घटनाएँ महिलाओं के प्रबंधन और समस्या समाधान कौशल को प्रदर्शित करती हैं। जिसमें रामायण में, माता सीता एक आदर्श धर्मपत्नी का उदाहरण प्रस्तुत करती है, जो वानप्रस्थ के समय में भी अपने जीवन का प्रबंधन करने के लिए दृढ़ संकल्प दिखाती है।

बुद्ध के द्वारा भी नारियों के संदर्भ में विचार किया गया लेकिन पूर्णतरू उनके दर्शन में नारीवादी का विमर्श पर संवाद सीमित रहा, क्योकि उनका दर्शन प्रमुख रूप से समाज में जाति व्यवस्था और शोषण को निर्षित करते हुए समानता स्थापित करना था। बुद्ध ने महसूस किया कि जीवन में हमारे

कर्म दूसरों को प्रभावित करते हैं, इस प्रकार कर्म के हिंदू विचार को बनाए रखते हैं। बुद्ध दर्शन में मोक्ष प्राप्ति सभी के लिए संभव थी अर्थात् बुद्ध दर्शन लिंग के आधार पर भेदभाव प्रस्तुत नहीं करता।

5. निष्कर्ष

भारत के दो प्रसिद्ध महाकाव्य महाभारत और रामायण में महिलाओं को सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक और तुलना में अधिक स्वतंत्रता और योग्यता के संदर्भ में शसक्त प्रस्तुत किया गया है। महाभारत में बहुपतित्व और बहुविवाह दोनों के प्रमाण मिलते हैं। उपरोक्त हिंदू महाकाव्यों के संदर्भों के आधार पर कहा जा सकता हैं कि महिलाओं के प्रबंधन और समस्या समाधान कौशल को प्रदर्शित करती हैं। बौद्ध धर्म ने जोर देकर कहा कि भारत में उचित संबंध विवाहित जोड़ों के बीच था। पत्नियों को समाज के रखरखाव के लिए अनुकूल घर का माहौल प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। मुख्यतः प्राचीन भारत वर्ष में महिलाओं का एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान था, वास्तव में उस समय के पुरुषों की तुलना में बेहतर स्थिति थी। साहित्यिक प्रमाण बताते हैं कि राजाओं और कस्बों को नष्ट कर दिया गया क्योंकि शासकों ने एक अकेली महिला को परेशान किया। उदाहरण के लिए, वाल्मीकि रामायण के अनुसार रावण और उसके पूरे राज्य का सफाया हो गया, क्योंकि उसने माता सीता का अपहरण कर लिया था। वेद व्यास की महाभारत के अनुसार सभी कौरव मारे गए क्योंकि उन्होंने द्रौपदी को सार्वजनिक रूप से अपमानित किया । भारतीय हिंदू दर्शन वैदिक कल से महिलाओं को समाज में एक पूरक और शक्ति के स्वरूप में स्थापित किया हैं। भारतीय नारीवाद समन्वयवादी एवं समता पर आधारित नारीवाद की विशेषता को प्रदर्शित करता हैं वहीं पश्चिमी नारीवाद समाज में नारी को एक विषय में प्रस्तुत करते हुए उनके अधिकारों एवं समानता पर अधिक बल देता हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. नागौरी, डॉ एस एल (1992), प्राचीन भारतीय नारीवाद का इतिहास, जयपुर नेशनल पब्लिकेशन हाउस, पेज 20
2. सिंह, वी एन और जन्मेजय सिंह (2012), नारीवाद, जयपुररू रावत पब्लिकेशन, पेज 33
3. Upinder Singh (2008). A History of Ancient and Early Medieval India. Pearson Education India. P॰ 381–384.
4. संध्या जैन (2011)। द इंडिया दे सॉ (वॉल्यूम–1). ओशन बुक्स. आईएसबीएन 978–81–8430–106–9.
5. Matilal, Bimal Krishna (1989), Moral Dilemmas in the Mahabharata, Shimla: Indian Institute of Advanced Studies
6. डॉ मालती शर्मा – "वैदिक संहिताओं में नारी", पृष्ठ संख्या –1–16.
7. सोती वीरेंद्र चंद्र – "भारतीय संस्कृति के मूल तत्व", पृष्ठ संख्या –83–85.
8. डॉ पी०सी० धर्मा – वैदिककाल में महिलाओं की स्थिति , जर्नल ऑफ़ इण्डियन हिस्ट्री (1948)।
9. मधु शास्त्री , "हिंदू महिलाओं की स्थिति", पृष्ठ संख्या–२७
10. हेथरिंगटन, नॉरिस एस. (2014)। ब्रह्मांड विज्ञान का विश्वकोश (रूटलेज रिवाइवल्स)रू आधुनिक ब्रह्मांड विज्ञान के ऐतिहासिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक आधार । रूटलेज। पी. 116.
11. डोडेलसन, स्कॉट (2003). आधुनिक ब्रह्मांड विज्ञान एल्सेवियर. आईएसबीएन 978–0–08–051197–9.

12. अपर्णा ईश्वरण (201) , माँ एक साक्षी के रूप मेंरू श्रीलंका में तमिल महिलाओं द्वारा कविता , साउथ एशियन रिव्यू ।
13. झा द्विजेन्द्रनारायण, श्रीमाली कृष्णमोहन (2021), 'प्राचीन भारत का इतिहास', कौशल प्रकाशन, आईएसबीएन–10, 9380172192 पृ. सं. 198–292
14. वर्मा, हरीशचंद्र (2015) श मध्यकालीन भारतश एच. एन.के. एन, प्रकाशन आईएसबीएन–10–9380172098 पृ. सं. 152–243
15. द्विवेदी. डॉ० कपिलदेव, (2018), 'वैदिक साहित्य एवं संस्कृति', विश्वविद्यालय प्रशासन, आईएसबीएन 8171246427,0 पृ.सं. 20 – 46.